प्रकाशकः -

प्रो. महेन्द्रकुमारः दवे
का.कुलसचिवः
श्रीसोमनाथसंस्कृतयुनिवर्सिटी
राजेन्द्रभुवनरोड, वेरावलम् - ३६२ २६६
गीर-सोमनाथजनपदम्, गुजरातम्
दूरभाष : ०२८७६-२४४५३२, फेक्सः २४४४१७
www.sssu.ac.in

सहसम्पादकः समन्वयकश्च -

डॉ. कार्तिकपण्ड्या
संशोधनाधिकारी
श्रीसोमनाथसंस्कृतयुनिवर्सिटी, वेरावलम्

© Shree Somnath Sanskrit University, Veraval - 2018

प्रथमं संस्करणम् - मई - २०१८

प्रतयः - ३५०

ISBN - 978-93-83097-27-2

मूल्यम् - रु. २०० /-

मुद्रकः - जलाराम ग्राफिक्स एन्ड ओफसेट
परमहंस अेपार्टमेन्ट के पास,
होटल कावेरी के पीछे, एस.टी.रोड, वेरावल-३६२ २६६
जि. गीर सोमनाथ, गुजरात (भारत)
दूरभाष : (०२८७६) २२१८६१

Shree Somnath Sanskrit University Grantha Series - 10

VĀKYĀRTHAJYOTIḤ

Issue - 2 Year - 2015-16

Chief Editor
Pro. Ark Nath Chaudhary
Vice-Chancellor
Shree Somnath Sanskrit University, Veraval

Editors
Dr. Pankajkumar Rawal
Dr. Satrughna Panigrahi

Shree Somnath Sanskrit University - Veraval - Gujarat

११ संस्कृतसाहित्ये पित्रोः गौरवम् १२१-१२५

डॉ. डायालाल एम. मोकरिया

१२ ज्यौतिषशास्त्रे नवविधकालमानविचारः १२६-१३३

डॉ. रमेशचन्द्रबाबूलालशुक्लः

१३ मन्त्रार्थविचारः १३४-१४१

डॉ. शत्रुघ्नपाणिग्राही

१४ व्याप्तिस्वरूपविचारः १४२-१५२

डॉ. बी. उमा महेश्वरी

१५ भावविकारसन्दर्भे भावपदार्थाः १५३-१६१

डॉ. दीपेशः विनोदः कतिरा

१६ भारतीयदर्शनेषु पाठसमालोचनपद्धतिः १६२-१७८

डॉ. जानकीशरणः आचार्यः

१७ अनन्योक्तेरन्योक्तेरीषदास्वादः १७९-१८९

डॉ. अमृतलालः भोगायता

१८ डॉ. गोस्वामी बलभद्रप्रसाद शास्त्री कृत १९०-२०१
"इन्दिराजीवनम्" शतककाव्य का शास्त्रीय अध्ययन

डॉ. कार्तिकः पण्ड्या

१९ Copyrights in India: An Introduction २०२-२०८

Ravindra Suryakant Kale

विध्यादयोऽर्थाः लिङः वाच्याः द्योत्या वा

प्रो. अर्कनाथचौधरी, कुलपतिः

श्रीसोमनाथसंस्कृतविश्वविद्यालयः, वेरावलम्

विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसंप्रश्नप्रार्थनेषु लिङ् (३.३.१६१) इति सूत्रं विध्यादिष्वर्थेषु लिङ्लकारं विदधाति। विधिः प्रेरणं भृत्यादेः स्वस्मात् निष्कृष्टस्य कनिष्ठादेर्वा। निमन्त्रणं खलु आवश्यके कर्मणि उपस्थितये प्रेरणम्। आमन्त्रणमपि तादृशमेवाह्वानरूपप्रवर्तनम्, किन्तु अत्र कामचारानुज्ञा भवति। अधीष्टः सत्कारपूर्वको व्यापारः, सम्प्रश्नः खलु विचारपूर्वकं निर्धारणम्। प्रार्थनं तु याच्ञा एव।

एषु सर्वेषु अर्थेषु प्रवर्तनात्वमर्थात् प्रवृत्त्यनुकूलव्यापार-त्वमनुस्यूतमतः प्रवर्तनायां लिङ् इत्येव सुवचम् इति दीक्षितमहाशयाः प्रोक्तवन्तः।

अत्र समुदेति प्रश्नः –

किं विध्यादयोऽर्थाः लिङः वाच्याः द्योत्या वा ?

विध्यादयः लिङोऽर्थाः न भवितुमर्हन्ति, यतोहि 'लः कर्मणि च भावे चाकर्मकेभ्यः' इति सूत्रं लकाराणां वाच्यं कर्तृकर्मभावनारूपमङ्गीकरोति। यद्युच्यते- "लः कर्मणि च भावे चा कर्मकेभ्यः" इति सूत्रं लिङ्भिन्नलकारविषयकं स्वीकरणीयमिति चेत् ? यजेत पठेत् इत्यादौ लिङः कर्तृवाचकताया अभावेन शबादि प्रत्ययाः कर्तरि शप् इत्यादिभिः विहिताः न स्युः। तेन इष्टरूपासिद्धिर्भवेत्।

वाच्यत्वपक्षे उपस्थितं दोषं दृष्ट्वा तन्निराकरणाय दीक्षितः सूत्रस्य वृत्तौ एषु द्योत्येषु वाच्येषु वा लिङ्स्यादित्याह। इत्थं विध्यादयोऽर्थाः लिङः द्योत्याः सन्ति इति स्वीक्रियते। किन्तु 'लः कर्मणि च

डॉ. गोस्वामी बलभद्रप्रसाद शास्त्री कृत
"इन्दिराजीवनम्" शतककाव्य का काव्यशास्त्रीय अध्ययन

डो. कार्तिक पण्ड्या
संशोधनाधिकारी, संशोधन विभाग,
श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी, वेरावल (गुजरात)

प्रस्तावना - संस्कृत की नाना काव्य विधाओं में हमारी संस्कृति पल्लवित हुई है। हमारी संस्कृति का प्राण आध्यात्मिक भावना है। संस्कृत वाङ्मय में त्याग एवं तपस्या के द्वारा हमारी संस्कृति संवर्धित हुई है। वैदिक वाङ्मय से प्रभावित भारतीय कवि को आत्मानुभूति जब काव्यरूप ग्रहण करने के लिए चञ्चल कामिनी के समान थिरक पड़ी, फलतः नाना भंगिमाओं से निःसृत काव्यधारा आशावादिता से परिपूर्ण रही।

संस्कृत साहित्य विश्व वाङ्मय में विविध विधाओं से पल्लवित है। संस्कृत खण्डकाव्य की व्यापक विधा में शतककाव्य परम्परा अति दीर्घकाल से संस्कृत साहित्य में प्रचलित है (अर्थात् संस्कृत काव्य की विधाओं में शतककाव्यों का स्थान खण्डकाव्य के अन्तर्गत प्रतिष्ठित होता है) । वैसे शतककाव्य, मुक्तककाव्य के प्रमुख उदाहरण हैं । समग्र शतककाव्य का स्वरूप बहु आयामी होकर लोकमानस की सुन्दर मीमांसा करता है। शतककाव्य में ही अनेकरूपों में भावों की अभिव्यक्ति हुई है। "शतक" हमारी वैदिक परम्परा में पूर्णता का प्रतीक रहा है। "जीवेम शरदः शतम्" आदि की आत्मा पूर्णता तथा कल्याण से युक्त है। इसी से प्रेरित होकर कवि डॉ. गोस्वामी बलभद्रप्रसाद शास्त्री की भी स्वानुभूति शतककाव्य के रूप में प्रकट हुई।

संस्कृत शतककाव्यों की सुदीर्घ परम्परा में प्राचीन काल से

भर्तृहरि जैसे यशस्वी कवियों के अतिरिक्त मध्यकालीन एवं अर्वाचीन अनेक कवियों की स्तरीय शतककाव्य कृतियाँ प्राप्त होती है । कुछ शतककाव्य देव स्तोत्रात्मक हैं तो कुछ श्रीमती इन्दिरा गांधी प्रभृति राष्ट्रीय महापुरुषों के भव्य व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व के निरूपक हैं । स्वातन्त्र्योत्तर अर्वाचीन संस्कृत शतककाव्य के अन्तर्गत संशोधनकर्ता ने ग्यारह जितने श्रीमती इन्दिरा गांधी पर आधृत शतककाव्य पायें हैं, जिनका उल्लेख निम्नलिखित है –

१. श्री कृष्ण सेमवाल कृत इन्दिराकीर्तिशतकम्
२. श्री कृष्ण सेमवाल कृत प्रियदर्शिनीयम्
३. श्री हजारीलाल शास्त्री कृत इन्दिराप्रशस्तिकाव्यम्
४. श्री हजारीलाल शास्त्री कृत इन्दिराजयविजयवैजयन्ती
५. डॉ. गोस्वामी बलभद्रप्रसाद शास्त्री कृत इन्दिराजीवनम्
६. डॉ. रमेशचन्द्र शुक्ल कृत इन्दिरायशस्तिलकम्
७. श्री रामकृष्ण शास्त्री कृत इन्दिराशतकम्
८. श्री विष्णुदत्त शर्मा कृत इन्दिराविरुदम्
९. श्रीमती शान्तिरथी कृत इन्दिराप्रशस्तिशतकम्
१०. श्री सुन्दरराज कृत अभागभारतम्
११. डॉ. उमाकान्त शुक्ला कृत कूहा

इस वाक्यार्थ प्रस्तुति में संशोधनकर्ता डॉ. गोस्वामी बलभद्रप्रसाद शास्त्री कृत "इन्दिराजीवनम्" शतककाव्य का काव्यशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत करता है।

कवि परिचय- "इन्दिराजीवनम्" शतककाव्य के रचयिता डॉ.

गोस्वामी बलभद्रप्रसाद शास्त्री है। उनका जन्म ०७ अक्टूबर १९२५ में उत्तर प्रदेश राज्य के हरदोई जनपद के ग्राम सकाहा में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री गोविन्द प्रसाद गोस्वामी तथा माता का नाम महादेवी था। इन्होंने साहित्याचार्य, एम.ए., पीएच.डी. एवं साहित्य रत्न की उपाधि विधिवत् धारण की। बलभद्रप्रसाद बचपन से ही प्रखर बुद्धि के थे। इसके बाद जैसे-जैसे ये बचपन से युवावस्था की ओर बढ़े वैसे-वैसे इनका ज्ञान भी उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त हुआ। इनका अधिकांश समय ज्ञानार्जन में व्यतीत होता था। वे शिक्षा विभाग में ३ वर्ष तक प्राध्यापक रहें एवं २६ वर्ष तक उत्तर प्रदेश ग्राम्य विकास में राजपत्रित अधिकारी रहें।

डॉ. गोस्वामी बलभद्र प्रसाद शास्त्री की कृतियाँ इस प्रकार है–

१.	काव्य	-	चक्रव्यूहम्
२.	महाकाव्य	-	नेहरुयशःसौरभम्, सिन्धुराजवधम्, भागीरथीदर्शनम्, इन्दिराजीवनम्
३.	शतककाव्य	-	इन्दिराजीवनम्,
४.	नाटक	-	सेतुबन्धम्, कर्णाभिजात्यम्
५.	एकाङ्की	-	यौतकं दशमग्रहः, विद्या ददाति विनयम्, उत्कोञ्चकौतुकम्
६.	अन्य	-	लिङ्गपुराण समीक्षा (शोध), स्फुट कविता संग्रह (ज्योतिषमती)

डॉ. गोस्वामी बलभद्र प्रसाद शास्त्री को अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया जैसे–

१. कालिदास पुरस्कार – उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी

२. गीता पुरस्कार –दो बार, भाषा विभाग हरियाणा

३. विशेष पुरस्कार – तीन बार, उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी

४. आकाशवाणी पर साहित्यिक प्रसारण

५. अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित

६. शोधकार्य – हुंमायु, रुहेलखण्ड, कानपुर विश्वविद्यालयों द्वारा इनकी रचनाओं पर शोधकार्य

७. विश्वविद्यालयों में इनकी रचनाएँ पाठ्यक्रम में भी निर्धारित हैं

कथावस्तु - "इन्दिराजीवनम्" अर्वाचीन संस्कृत साहित्य का एक भव्य शिल्प है। इस काव्य में भारत के विकास में श्रीमती इन्दिरा गांधी के योगदान की गाथा उपनिबद्ध की गई है। कवि ने इसके विषय में सत्य ही कहा है कि यह न दलगत नीति के कारण प्रस्तुत है न राजनीति से ही प्रेरित। यह तो 'चारुचारित्र्यगीति' तथा 'भव्यभावों' की अनुभूति है। जैसे -

न च दलगतनीतिनप्यसौ राजनीतिः,
सरसकृतिरियं मे चारुचारित्र्यगीतिः।
सहृदयहृदि वेद्या भव्यभावानुभूति-
र्भवतु कविगिरेयं मङ्गलानां प्रसूतिः॥

राष्ट्रीयता, देशभक्ति, स्पष्टवादिता, ईमानदारी, निष्ठा और प्रजातन्त्र की भावना से ओतप्रोत यह काव्य उदात्तभावों और जीवनदर्शन से परिपूर्ण है। काव्य के प्रारम्भ में सर्वप्रथम शारदा की स्तुति करते हुए कहा गया है–

वाणी स्वयं ललितकाव्यकलाकलापान्,
सूते यदीयकृपयाऽल्पधियोऽपि पुंसः।
वीणास्वरैर्नवरसान् हृदि पोषयन्ती,
वागीश्वरी वितनतां मयि सा प्रसादम्॥

इसके पश्चात् नेहरू कुल की प्रशंसा करते हुए कवि कहता है कि लोकहित में अपनी आत्मा की आहूति देने वाले, विद्वान, मानी, यशस्वी जनों के उदीयमान गुणों, चरित्र, ऐश्वर्य एवं समृद्धि से पृथ्वी पर नेहरू कुल प्रसिद्ध हुआ है। उसी नेहरू कुल के वरिष्ठ पुरुषों ने और नारियों ने भी देशहित में उद्यत होते हुए कठोर संघर्ष के पथ पर प्रयत्नशील होकर बन्दीगृह को कठोर यातना भी सही है। पं. जवाहरलाल नेहरू की पत्नी कमला नेहरू संघर्ष मार्ग में रत रहते हुए ही गर्भवती हुई। कवि इन्दिरा जी के जन्म पर प्रकाश डालते हुए कहता है –

शुभे मुहूर्तशरदर्तुशोभने,
प्रसन्नभूव्योमदिगन्तमण्डले।
कुलामसौ चान्द्रमसीमिवोज्ज्वला,
मसूत कन्यां कुलकीर्ति वर्धिनाम्॥

भाषा शैली – इसकी भाषा सरल, सरस तथा प्रसाद गुणशालिनी है। वर्ण्यविषयानुकूल भाषा का प्रयोग किया गया है। कवि की भाषा में गौरव है जो सचमुच आकर्षण का केन्द्र है। भाषा में सुकुमारता एवं प्राञ्जलता है। यह काव्य को पढने पर पाठक मानो यथार्थ ही इन्दिरा जी के जीवन का दर्शन करने लगता है। इन्होंने वैदर्भी रीति का प्रयोग किया है। इसमें भावों की अभिव्यञ्जना की शक्ति इतनी प्रबल है कि वे कठिन तत्त्वों को सरल भाषा में प्रस्तुत कर सकते है। इसमें प्रसाद, माधुर्य एवं ओजगुण का यथास्थान प्रतिपादन किया गया है –

प्रसाद गुण –

यदा स्वराष्ट्रं सततप्रयासैः,
प्रवृत्तमासीत् प्रगतौ तदानीम्।
आसीत् स्वदुष्कृत्यविपाकबह्वौ,

दन्दह्यमानं ननु पाकराष्ट्रम्॥

इस पद्य में प्रसाद गुण एवं वैदर्भी रीति है। अन्य उदाहरण -

विवेक बुद्धया जनशान्तिहेतोः,
सदुक्तमासीद् यदपीन्दिरायाः।
मदोद्धतैः पाकजनेश्वररैस्तत्,
तिरस्कृतं दुर्मतिभिर्नियत्या॥

माधुर्य गुण –

तां समक्षां राजनयप्रबन्धे,
विलोक्य तातस्य जवाहरस्य।
सन्तानसाफल्य सुखानुभूतिं,
मातुं न शेके हृदयं विशालम्॥

यह पद्य माधुर्य गुण युक्त है। माधुर्य गुण का अन्य उदाहरण –

निरन्तरं सा प्रगतिं दधाना,
विकासकार्येषु समाजधात्री।
सौजन्यमाधुर्यगुणैरपीयं,
प्रतिष्ठिताभूज्जनमानसेषु॥

अन्य उदाहरण –

वर्धमानं विरेजेऽस्याः प्रभामण्डलमीदृशम्।
द्रष्टुमुत्काजना आसंश्चकोरा एंन्दवं यथा॥

ओज गुण –

शौर्येण दीप्तैरपि साहसाङ्कैः,

शूरैः समृद्धैः रणकौशलेन।

जलस्थलाकाशगतप्रहारैः,

शत्रुं पराजित्य वृता जयश्रीः ॥

प्रस्तुत पद्य ओजगुण युक्त है। अन्य उदाहरण –

ऐश्वर्यशिखरारुढा प्रभाववस्मिण्डिता।

सूर्यप्रभेव सा चक्रे कुमुदान मलिनामपि ॥

अन्य उदाहरण –

तदार्यवीरा! नरसिंहकल्पाः,

शौर्य स्मरन्तो निजपूर्वजानाम्।

विदीर्यवक्षः प्रसभं रिपूणां,

रक्षन्तु राष्ट्रं प्रतिभां प्रतिष्ठाम् ॥

छन्द – इस काव्य में वसन्ततिलका, वंशस्थ, उपेन्द्रवज्रा, इन्द्रवज्रा, शार्दूलविक्रीडितम् आदि छन्दों का प्रयोग किया गया है। सोदाहरण इस प्रकार है।

वसन्ततिलका – इस छन्द का लक्षण इस प्रकार है – "उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः" अर्थात् इस छन्द के प्रत्येक चरण में एक त-गण, एक भ-गण, दो ज-गण और अन्त में दो गुरु वर्ण है। इस छन्द के प्रत्येक चरण में १४ अक्षर/मात्रा है।

उदाहरण - वाणी स्वयं ललितकाव्यकलाकलापान्,

सूते यदीयकृपयाऽल्पधियोऽपि पुंसेः।

वीणास्वरैर्नवरसान् हृदि पोषयन्ती,

वागीश्वरी वितनुतां मयि सा प्रसादम् ॥

वंशस्थ – इस छन्द का लक्षण इस प्रकार है – "जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ" अर्थात् इस छन्द के प्रत्येक चरण में एँक ज-गण, एक त-गण, एक ल-गण और एक र-गण है। इस छन्द के प्रत्येक चरण में १२ अक्षर/मात्रा है।

उदाहरण – विनोदयन्ती प्रियलेकमानसं,

प्रमोदयन्ती पितरं स्वलीलया।

स्वमातु रुत्संतले शुभानना,

निनाय सा शैशवमिन्दु शोभना ॥

उपेन्द्रवज्रा – इस छन्द का लक्षण इस प्रकार है – "उपेन्द्रवज्रा जतजास्तता गौ" अर्थात् इस छन्द के प्रत्येक चरण में एक ज-गण, एक त-गण, एक ज-गण और अन्त में दो गुरु वर्ण है। इस छन्द के प्रत्येक चरण में ११ अक्षर/मात्रा होते है।

उदाहरण – यथा हि विज्ञान विधिं नियोज्य,

तथैव कल्याणकरैरुपायैः।

चकार राष्ट्रं बहुशः प्रयासैः,

समृद्धमन्त्रैरपि साधनैः सः ॥

इन्द्रवज्रा – इस छन्द का लक्षण इस प्रकार है – "स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः" अर्थात् इस छन्द के प्रत्येक चरण में दो त-गण, एक ज-गण और अन्त में दो गुरु वर्ण है। इस छन्द के प्रत्येक चरण में ११ अक्षर/मात्रा होते है।

उदाहरण – सा राजनीतौ प्रतिभावलेन,

प्राप्य प्रवेशं प्रगतिं दधाना।

राष्ट्रस्य सर्वोच्चपदाधिरुढा,

लेभे प्रतिष्ठां निजपूर्वजानाम् ॥

शार्दूलविक्रीडित – इस छन्द का लक्षण इस प्रकार है – "सूर्याश्वैर्यसजस्तताः सगुखः शार्दूलविक्रीडितम्" अर्थात् इस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः म-गण, स-गण, ज-गण, स-गण, दो त-गण और अन्त में एक गुरु वर्ण होता है। इस छन्द के १२ एवं ७ अक्षरों पर विश्राम होता है। इस छन्द के प्रत्येक चरण में १९ अक्षर/मात्रा होते है।

उदाहरण – इत्थं दैववशाद् दुरन्तपतितां बाधां प्रशस्तेपथि,

सद्यो रोद्धुमुपायमाकुलदृशा सा मार्गयन्तीन्दिरा।

काले चापदि वर्तयन्ति सुधियो यद् वर्तमाने हित-

मित्यालोच्य सुदुर्गमं निरणयद् मार्ग विधाने स्थितम् ॥

अलङ्कार - इस काव्य में अनुप्रास, उपमा, अर्थान्तरन्यास आदि अलङ्कारों का अधिकांश प्रयोग कवि ने किया है। अलङ्कारों के बाहुल्य से यह काव्य सुशोभित हो रहा है।

अनुप्रास अलङ्कार - इस अलङ्कार का लक्षण इस प्रकारं है – "अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्"। इसका उदाहरण निम्नलिखित है -

दिने दिने सौम्यगुणैः प्रवर्धिनी,

स्वरूप लावण्यमनः प्रसादिनी।

प्रमोदमानैर्गुरुभिः सुदर्शना-,

प्यकारि नाम्ना प्रियदर्शिनी च सा ॥

अन्य उदाहरण -

विचिन्त्य चैतत् सह सेन्दिरा तान्,

व्यापार कोषान् जनता हिताय।

अध्यग्रहीद येन विकासगङ्गा,

ग्रामान्मुखीभूय गतिं प्रपेदे ॥

इस पद्य में त, न आदि व्यञ्जनों की पुनरावृत्ति होने से अनुप्रास अलङ्कार है।

उपमा अलङ्कार - इस अलङ्कार का लक्षण इस प्रकार है – "साधर्म्य वैधर्म्य वाक्येक्य उपमा द्वयोः"। इसका उदाहरण निम्नलिखित है -

शनैः शनैश्चान्द्रमनसी कलेव सा,

नवोदया स ववृधे दिवानिशम्।

कुलानुरूपं गुणशीलगौरवं,

समादधाना नवकञ्जलोचना ॥

इस पद्य में इन्दिरा के नेत्रों की समानता कमल से एवं उनके गुण और शील के गौरव को नवोदित चन्द्रमा की कला के समान बताया गया है। अतः यहाँ पर उपमा अलङ्कार है।

अन्य उदाहरण –

तदार्यवीरा! नरसिंहकल्पाः,

शौर्य स्मरन्तो निजपूर्वजनानाम्।

विदीर्यवक्षः प्रसभं रिपूणां,

रक्षन्तु राष्ट्रं प्रतिभां प्रतिष्ठाम् ॥

इस पद्य में पूर्वजों के शौर्य का स्मरण करते हुए नरसिंह के समान बताया गया है। अतः यहाँ पर उपमा अलङ्कार है।

रस – इस काव्य में वीर, अद्भुत, करुण आदि रसों का यथोचित उपयोग कवि ने किया है। जिनके उदाहरण इस प्रकार हैं।

वीर रस – वीर रस युक्त पद्य का उदाहरण निम्नलिखित है।

शौर्येण दीप्तैरपि साहसाङ्कैः

शूरैः समृद्धैः रणकौशलेन।

लस्थलाकाशगतप्रहारैः,

शत्रुं पराजित्य वृता जयश्रीः ॥

इस पद्य के माध्यम से वीरों के पराक्रम का वर्णन किया गया है। अतः यहाँ पर वीर रस है।

अद्भुत रस – अद्भुत रस युक्त पद्य का उदाहरण निम्नलिखित है।

शनैः शनैः राजनयप्रसङ्गे,

सन्नीतिवाक्यैः पितरं प्रबुद्धा।

परामृशन्ती प्रतिभागुणो,

तमिन्दिराश्चर्यगतं चकार ॥

इस पद्य में इन्दिरा जी की प्रतिभागत विशेषता के माध्यम से उनके अद्भुत स्वरूप के दर्शन होते हैं। अतः यहाँ पर अद्भुत रस है।

करुण रस – करुण रस युक्त पद्य का उदाहरण निम्नलिखित है।

जनाः प्रबुद्धा अपि बालवृद्धाः,

सामान्यलोका वनितायुवानः।

शोकाकुला वै निधनेन देव्या-

दुःखानुभूत्याऽश्रुमुखा अभूवन् ॥

इस पद्य के माध्यम से लोगों का इन्दिरा गाँधी की मृत्यु पर शोक प्रकट हो रहा है। अतः यहाँ पर करुण रस है।

सारांश – "इन्दिराजीवनम्" शतक काव्य इन्दिरा गाँधी के जीवन का परिचायक है। इसके माध्यम से इन्दिरा गाँधी की राष्ट्रीयता, देशभक्ति, स्पष्टवादिता, ईमानदारी और निष्ठा पर प्रकाश डाला गया है। इस काव्य में एक ओर इन्दिरा गाँधी के शैशवकाल का वर्णन किया गया है, तो वहीं दूसरी ओर उनके प्रधानमन्त्री बनने, पाकिस्तान विजय एवं राष्ट्र के लिये किए गए कार्यों का वर्णन प्राप्त होता है। इन्दिरा गाँधी अपनी विवेकपूर्ण व्यवहार कुशलता के लिये भारत में और उससे बाहर विदेशों में भी विख्यात थीं। इस उत्साहपूर्ण तथा तेजस्वी भारतीय नारी का सशक्त स्वर उनकी उज्ज्वल और जीवनदायी मुस्कान लोगों के मन में विश्वास भरती थी। साथ ही साथ उनमें अपनी शक्ति में, अच्छाई में और विवेक में दृढ विश्वास उत्पन्न करती थी। इन्दिरा गाँधी अब हमारे बीच नहीं रही, जो इस देश की जनता की अमूल्य निधि स्वरूप आपस में मैत्री, सहयोग, स्वतन्त्रता तथा शान्ति के प्रति निष्ठा की रक्षा करती रही। उनके रक्षकों ने ही उन्हें अपनी गोली का निशाना बनाया और वह काल के मुँह में समा गई।

इस प्रकार कवि ने "इन्दिराजीवनम्" नामक शतक काव्य में इन्दिरा गाँधी के प्रारम्भिक जीवन से लेकर उनकी अन्तिम यात्रा तक वर्णन कविने अपनी प्रतिभापूर्ण लेखनी से किया है। अन्त में, "रचना कौशल की दृष्टि से यह एक उत्कृष्ट शतक काव्य है" - यह कहते हुए मैं विराम लेता हूँ।